7

Topic .... Date .... Page No................

एक अच्छी पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ :-

एक अच्छी पाठ्यपुस्तक का सिद्धान्त करना बहुत ही कठिन कार्य है उनका विकास एवं निर्माण बहुत ही सावधानी से किया जाना चाहिए एक अच्छी पाठ्यपुस्तक का निर्माण एवं विकास ~~एक~~ निम्न बातों पर निर्भर करता है।

1. पाठ्यपुस्तक का निर्माणकर्ता :- ऐसे व्यक्ति के द्वारा किया जाना चाहिए जिसे उस विषय को पढाने का अनुभव हो जिस कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक निर्मित की जाती है।

2. पाठ्यक्रम पर आधारित :- सामाजिक अध्ययन की पाठ्य-पुस्तक का विकास करते है समय शिक्षा विभाग द्वारा सामाजिक अध्ययन के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम को ध्यान मे रखना चाहिए।

3. उद्देश्य पूर्ति मे सहायक हो :- जो भी तथ्यात्मक सूचनाएँ पाठ्यक्रम पुस्तकों के लिए ग्रहण की जाएँ व उद्देश्यों की प्राप्ति मे सहायक हो।

4. पाठ्यपुस्तक की पाठ्यवस्तु :- पाठ्यपुस्तक का चयन करते समय पाठ्यपुस्तक के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान मे रखना चाहिए

(1) पाठ्य-वस्तु उस श्रेणी के बच्चों के स्तर के अनुकूल होनी चाहिए जिस श्रेणी के लिए वह लिखी जा रही है।

(2) सामाजिक अध्ययन की पाठ्यवस्तु देश के आदर्श नागरिकों के निर्माण मे सहायक होनी चाहिए।

Class world Specail quality

Teacher Remarks's ....

Pragya College of Education

(iii) पाठ्यवस्तु बच्चों की जिज्ञासा तथा रुचि बढाने वाली होनी चाहिए

(iv) पाठ्यवस्तु सरल, स्पष्ट, एवं, संबोध्य होनी चाहिए।

(v) पाठ्यवस्तु में भारत को गौरवशाली इतिहास का दिग्दर्शन भी करना चाहिए, जिससे उनमें उनसे हीनता की भावना के स्थान पर आत्म गौरव की भावना का विकास हो सके।

(vi) पाठ्यवस्तु में ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण करते समय नाम तथा तिथियों की यथार्थता एवं शुद्धता का ध्यान रखना।

☆ **पाठ के अंत में सारांश :-**

प्रत्येक पाठ के अंत में सारांश के रूप में मुख्य-मुख्य बातें दोहरानी चाहिए।

☆ **अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए निर्देश :-**

पाठ के अंत में स्वाध्याय, विस्तृत अध्ययन, संदर्भ ग्रंथों का अवलोकन, समय रेखा मानचित्र मडल आदि बनाने आदि के लिए शिक्षकों तथा छात्रों का मार्गदर्शन करने हेतु आवश्यक निर्देश देने चाहिए।

☆ **अभ्यासार्थ प्रश्न :-**

पाठ के अंत में पुनरावृत्ति, ~~स्वकार्य~~ गृहकार्य एवं अभ्यास के लिए निबंधात्मक, लघु उत्तर तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाने चाहिए।

☆ **पारिभाषिक शब्द आदि की व्याख्या :-**

पाठ में आए हुए विशिष्ट शब्दों पारिभाषिक शब्दों, तिथियों आदि की स्पष्ट व्याख्या करनी चाहिए जिससे उस शब्द की स्पष्टता विषय को भी स्पष्ट कर दे।

Pragya College of Education

★ **चित्र, मानचित्र, चार्ट आदि :-**

पाठ का आकार छोटे चित्र एक ओर तो विषय को स्पष्ट करते हैं। तथा दूसरी ओर पाठ्यपुस्तक को रोचक भी बनाते हैं।

पाठ्यपुस्तक वस्तु की व्यवस्था :-

पाठ का आकार छोटे बच्चों के लिए छोटा तथा बड़े बच्चों के लिए बड़ा होना चाहिए पाठ्यपुस्तक की व्यवस्था में मनोवैज्ञानिक एक तार्किक क्रम का भी ध्यान रखना चाहिए। पाठ्यवस्तु के पाठ समान अनुपात में होने चाहिए पाठों में इस प्रकार व्यवस्थित किया जाए की उसकी लम्बाई धीरे-2 बढ़े।

पाठ्यपुस्तक की भाषा शैली :-

भाषा सरल एवं शुद्ध होनी चाहिए जो कि बच्चों को आसानी से ~~समझ~~ समझ में आ सके तकनीकी शब्दों को अंग्रेजी में भी देना चाहिए ~~वाक्य में~~ वाक्य में प्रयोग स्तर के अनुकूल होने चाहिए।

☆ **पाठ्यपुस्तक की छपाई तथा गेटअप :-**

पाठ्यपुस्तक का निर्माण करने के लिए कागज अच्छे स्तर का होना चाहिए सफेद चिकना कागज अच्छा रहता है। मुख्यपृष्ठ पाठ्यपुस्तक का मुख्यपृष्ठ tittle page सचित्र और आकर्षण होना चाहिए।

Pragya College of Education

पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी अन्य आवश्यक बातें :-

पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते समय पाठ्यवस्तु भाषाशैली तथा छपायी से संबंधित बातों के अतिरिक्त कुछ अन्य बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1) भूमिका या प्रस्तावना।
2) विषय सूची।
3) परिशिष्ट
4) सूचिपत्र।

सभी बातों को ध्यान में रखकर यदि पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया जाता है। तो उससे शिक्षकों एवं छात्रों को वास्तविक लाभ हो सकेगा।

☆ मूल्य शिक्षा क्या है :-

मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है इसका संबंध मनुष्य के भावनात्मक पक्ष से होता है जो कि उनके व्यवहार को नियंत्रित एवं निर्देशित करता है। छात्रों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। आज के भौतिकवादी युग में भी मूल्य शिक्षा चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक है और इस पर जोर देने की आवश्यकता है। समाज और देश के लिए इस ज्ञान का महत्व भी है। आज कोई भी राष्ट्र विज्ञान की महत्ता को अस्वीकार नहीं कर सकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका प्रयोग है। परन्तु जीवन में केवल पदार्थ ही महत्वपूर्ण नहीं रहा की भौतिक दिशा सुधारने हेतु तो जीवन मूल्यों का उपयोग कर हम उन्नति की सही राह चुन सकते हैं मूल्यों का ह्रास होने से समाज में प्रकार के अपराध बढ़ रहे हैं मूल्य विहीन समाज में असंतोष फैलाता है बेकारी के बढ़ने से कई चुनौतियाँ खड़ा दिखाई देता है। इस पर सोच-विचार आवश्यक है। हमारे देश के आधों से अधिक व्यक्ति जो शिक्षित हैं उनके सामने कोई

Pragya College of Education

लक्ष्य नहीं है। उनके सामने अंधेरा ही अंधेरा है शिक्षा प्राप्ती की एक सुविधाएं व नीति होनी चाहिए छात्रों को खुद से ही यह जानकारी देनी चाहिए की जीवन के आगे चलकर तुम्हें किन ~~समास्या~~ समास्याओं से जुझना होगा।

छात्रों को पता होना चाहिए कि जीने के मार्ग उनके हैं तथा उस मार्ग को ही चुनना श्रेयस्कर है। जो व्यक्ति शिशु के स्वभाव के अनुकूल हो शिक्षा के आगे साथ नैतिक मूल्यों को संबद्ध कराने का यह अर्थ नहीं है। कि बालकों को निरंतर भारी होते हुए बस्ते के एक ओर किताब का बोझ डाल दिया जाए इससे उनके जीवन में कोई गुणात्मक परिवर्तन नहीं आ सकता क्योंकि बच्चे समझते हैं। यह भी एक विषय है। जिसमें उन्हें अंक लाने होंगे।

अतः शिक्षा में ऐसे नैतिक मूल्यों को जोड़ने का असफल प्रयास नहीं करना चाहिए इसमें धार्मिक कट्टरता किसी एक धर्म के प्रति आग्रह जैसा पूर्वाग्रह भाव नहीं होना चाहिए। क्योंकि इससे शिक्षा बोझिल हो जाती है। मूल्य शिक्षा से देश, व्यक्ति और समाज सबका उत्थान होता है। पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो सबको बनाए।

Pragya College of Education

Topic .... Date .... Page No.................

संविधान में शिक्षा से संबंधित शामिल मूल्य कौन से

राष्ट्रीय लक्ष्य :- हमारे राष्ट्रीय लक्ष्यों का आधार हमारा संविधान है और हमारी संस्कृति विनासत है हमारे संविधान को शिक्षा द्वारा निम्नलिखित लक्ष्य प्राप्त करने पर बल दिया गया है।

(i) जनता के सिद्धान्तों को बढावा।
(ii) व्यक्ति का सम्मान
(iii) मजहब, भाषा, लिंग, जाति की दृष्टि से मुक्त रहकर सभी क्षेत्रों में विकास करने के अवसर की समानता।
सविंधान और कानून के लिए सम्मान।
(iv) राष्ट्रीय सुरक्षा, एकता और एकात्मकता।
(v) न्याय, सामाजिक और आर्थिक संस्कृतियों की सुरक्षा और विकास।
(vi) विश्व और देश की विभिन्न संस्कृतियों की सुरक्षा
(vii)

(viii) परस्पर विकास सम्मान और सहिष्णुता व परस्पर आदान प्रदान के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग और शांति।

(ix) संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अंतर राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग और अन्तर्राष्ट्रीय शांति और समझन से संबंधित उनके क्रियाकलापों में योगदान इत्यादि।

Pragya College of Education

Topic .... Date .... Page No...............

संविधान के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य :-

उपर्युक्त राष्ट्रीय लक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा की लक्ष्यों को इस प्रकार परिगणित किया जा सकता है।

⇒ सृजनशीलता और आत्मविश्वास के गुणों और मूल्यों के साथ व्यक्ति के वांछनीय अभिवृत्तियों, कार्यक्षमताओं और योग्यताओं का विकास।

⇒ जीवनयापन को सभी क्षेत्रों मे समाजिक न्याय और नैतिकता के उत्तरदायित्व के साथ एकता पंथ-निरपेक्षता और जनतंत्र की भावना को सुरक्षित रखते हुए उन्हें और आगे बढाने की इच्छा को जागरूक करना।

⇒ इन लक्ष्य को शिक्षा क्रम की क्रियाकलाप द्वारा ही भली-भांति प्राप्त किया जा सकता है। जिसको व्यापक व्यवसाय बाजार, उद्योग और व्यापार के सहयोग से न की केवल परामर्श से प्राप्त किया जा सकता है।

⇒ कठिन कार्य, परिश्रम और निपुणता की क्षमता की उपेक्षा करने वाले सभी शारीरिक क्रियाकलाप की योग्यता सभी छात्रों में विकसित करने के लिए उनको शारीरिक रूप से योग्य एवं सक्षम बनाना।

⇒ देश की तकनीकी आर्थिक, सांस्कृतिक और मानसिक आवश्यकताओं और अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए समुचित पाठ्यचर्या की रूपरेखा उसके क्रियान्वयन की योग्यताओं का विकास करना।

Pragya College of Education

Topic .... Date .... Page No........

⇒ अज्ञात परिस्थितियों का सामना करने निर्णय लेने समस्या समाधान करने और आलोचना चिंतन करने की क्षमताओ को विकसित करना।

सांविधानिक मूल्यों का वर्गीकरण :-

भारतीय संविधान की प्रस्तावना मे ऐसे मूलभूत मूल्यों तथा दर्शन को समाहित किया गया है। जिस पर पूरा संविधान आधारित है। इसमे सम्मिलित मूल्यों को संविधान के उद्देश्यों, धर्म निरपेक्षता, लोकतंत्र भारत राज्य की गणतांत्रिक प्रकृति, न्याय स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, मानवीय गरिमा तथा राष्ट्रीय एकता व अखंडता।

सांविधानिक मूल्य निम्नलिखित है :-

1. **सम्प्रभुता :**

सम्प्रभुता होने का अर्थ है कि भारत की पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता है तथा सर्वोच्च सच्चाई इसके पास है। प्रस्तावना मे हम भारत के लोग कहने यह इंगित करता है कि सप्रभुता भारत कि जनता मे निहित है।

2. **समाजवाद :-**

इस मूल्य का उद्देश्य सभी तरह की असमानताओ का अंत करने के लिए सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना है। यह कुछ हाथो मे धन तथा शक्ति के केंद्रीयकरण को रोकने का निर्देश देता है।

Pragya College of Education